RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

ARJUN BATCH

CLASS 10th | GEOGRAPHY

संसाधन एवं विकास

Resources and Development

अध्याय-1 | भाग-8

एकदम BASIC से!



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

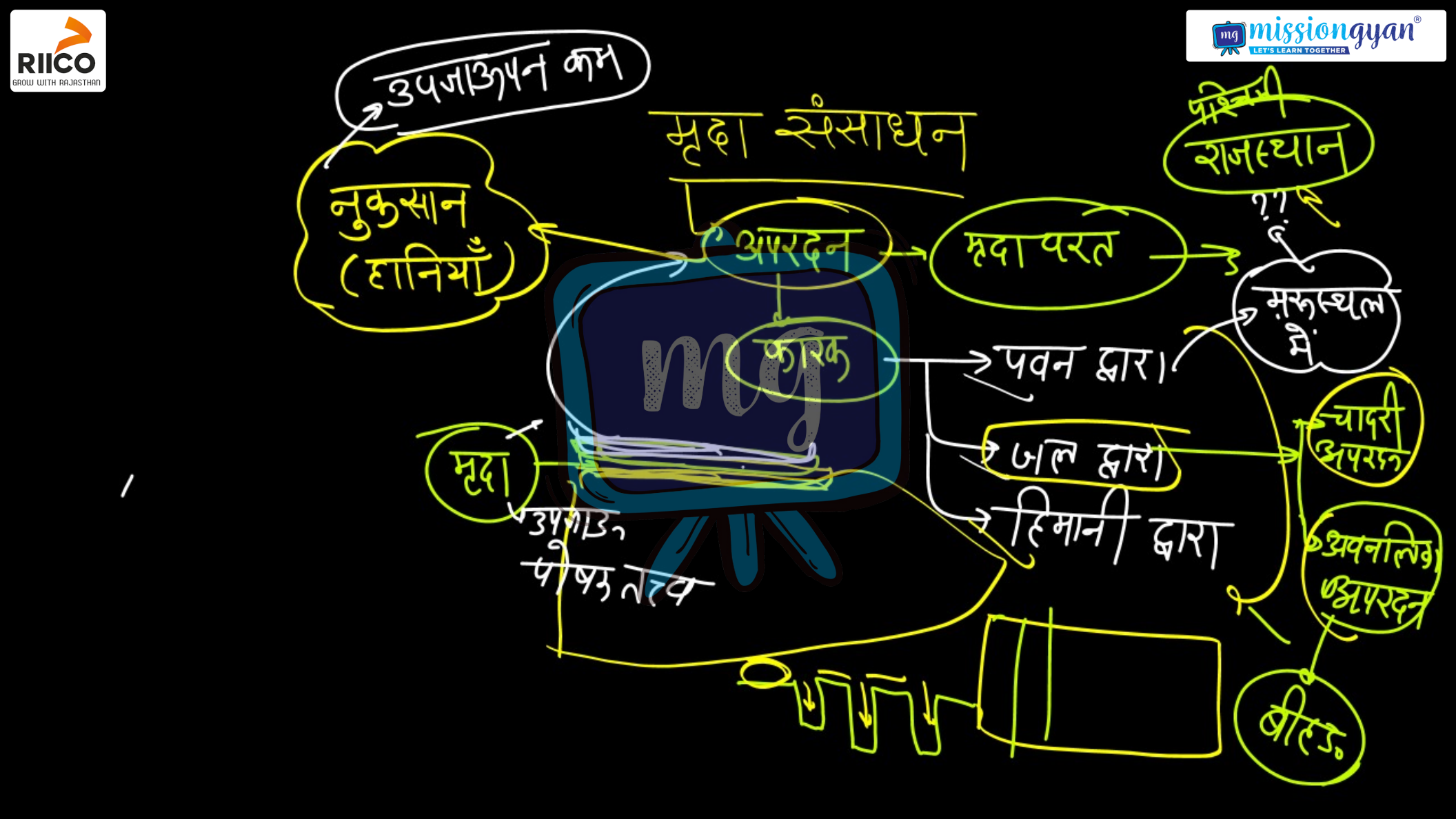
missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

आज क्या पढेंगे ?

1 मृदा अपरदन और संरक्षण

2 अभ्यास प्रश्न




मृदा संसाधन
उपजाऊपन कम
नुकसान (हानियाँ)
अपरदन
मृदा परत
पश्चिमी राजस्थान
??
मरुस्थल में
कारक
पवन द्वारा
जल द्वारा
हिमानी द्वारा
चादरी अपरदन
अवनलिका अपरदन
बीहड़
मृदा
उपजाऊ
पोषक तत्व

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



मृदा अपरदन और संरक्षण

- मृदा अपरदन : मृदा का कटाव और उसके बहाव की प्रक्रिया मृदा के बनने और अपरदन की क्रियाएँ आमतौर पर साथ-साथ चलती है और दोनों में संतुलन होता है।
- परंतु मानवीय क्रियाओं (वनोन्मूलन, अति पशुचारण, निर्माण, खनन आदि) से कई बार यह संतुलन भंग हो जाता है तथा पवन, जल और हिमनदी मृदा- अपरदन करते हैं।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

अवनलिकाएँ : बहता जल, मृदा को काटते हुए गहरी वाहिकाएँ बनाता है

- ऐसी भूमि जोतने योग्य नहीं रहती → उत्खात भूमि (Bad Land) कहते हैं।
- चंबल-बेसिन में ऐसी भूमि को खड्ड-भूमि (Ravine) कहा जाता है।

नलिकाएँ

मध्यप्रदेश, राजस्थान, उ॰प्र॰



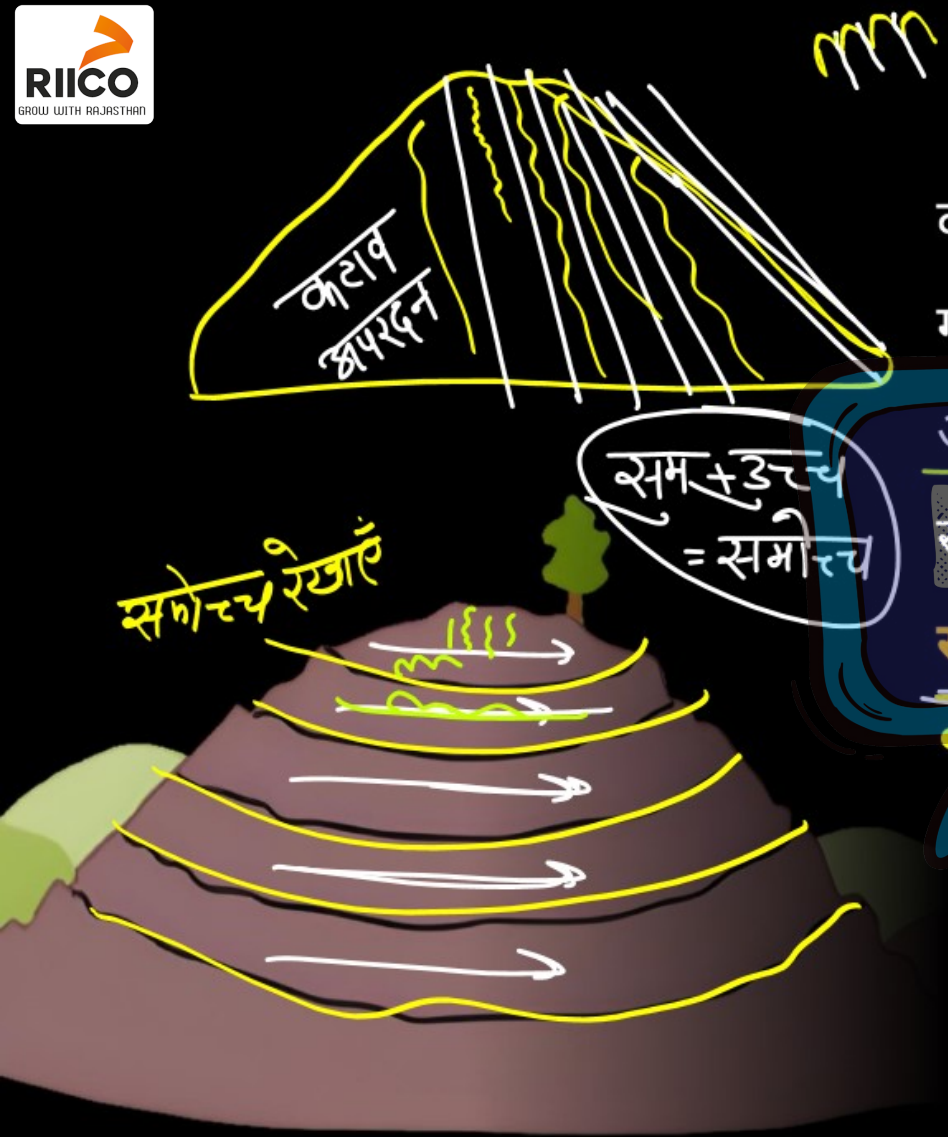




- चादर अपरदन (Sheet Erosion) : कई बार जल, चादर के रूप में ढाल के साथ नीचे की ओर बहता है। ऐसी स्थिति में ऊपरी मृदा घुलकर जल के साथ बह जाती है।
- पवन अपरदन (Wind Erosion) : पवन द्वारा मैदान अथवा ढालू क्षेत्र से मृदा को उड़ा ले ज़ाने की प्रक्रिया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

mg missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



कृषि के गलत तरीकों से भी मृदा अपरदन होता है। गलत ढंग से हल चलाने जैसे ढाल पर ऊपर से नीचे की ओर हल चलाने से वाहिकाएँ बन जाती हैं, जिसके अंदर से बहता पानी आसानी से मृदा का कटाव करता है।

समोच्च जुताई (Contour Ploughing)

- ढाल वाली भूमि पर समोच्च रेखाओं के समानांतर हल चलाने से ढाल के साथ जल बहाव की गति घटती है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

सोपान/सीढ़ीदार कृषि (Terrace Farming)

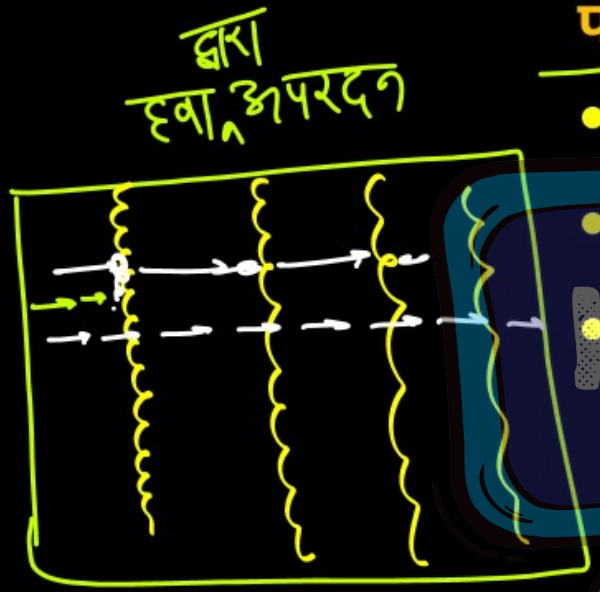
- ढाल वाली भूमि पर सोपान → कृषि-अपरदन का नियंत्रित (पश्चिमी और मध्य हिमालय)





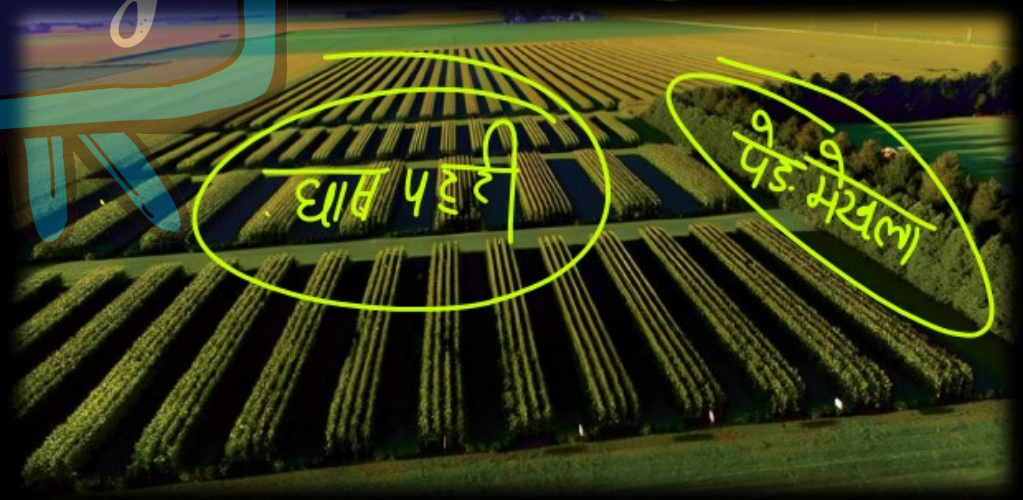
RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



पट्टी कृषि (Strip Farming)

- बड़े खेतों को पट्टियों में बाँटा जाता है।
- फसलों के बीच में घास की पट्टियाँ उगाई जाती हैं।
- ये पवनों द्वारा जनित बल को कमजोर करती हैं।



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

रक्षक मेखला(Shelter Belt)

- पेड़ों को कतारों में लगाकर पवनों की गति कम करना (पश्चिम भारत में रेत के टीलों के स्थायीकरण) पश्चिमी राजस्थान



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

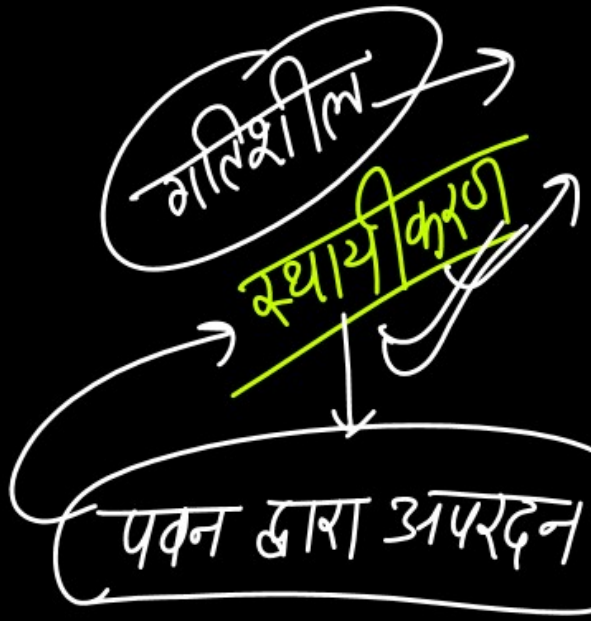
missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



अभ्यास प्रश्न

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

mg missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



2. हरियाणा
3. पश्चिमी उ०प्र०

1. बहुवैकल्पिक प्रश्न

(i) पंजाब में भूमि निम्नीकरण का निम्नलिखित में से मुख्य कारण क्या है ?

(क) गहन खेती

(ख) अधिक सिंचाई

(ग) वनोन्मूलन → झारखंड, ओडिशा, छत्तीसगढ़

(घ) अति पशुचारण → राज०, गुजरात, म०प्र०, महाराष्ट्र

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

(ii) निम्नलिखित में से किस प्रांत में सीढ़ीदार (सोपानी) खेती की जाती है ?

ढालों वाली भूमि

(क) पंजाब

(ख) हरियाणा

(ग) उत्तर प्रदेश के मैदान

(घ) उत्तराखण्ड

गहन कृषि

मैदानी क्षेत्र (जलोढ़)

पश्चिमी हिमालय

(iii)इनमें से किस राज्य में काली-मृदा मुख्य रूप से पाई जाती है ?

(क) जम्मू और कश्मीर

(ख) राजस्थान

(ग) महाराष्ट्र

(घ) झारखंड

दक्कन पठार का उत्तरी-प० भाग

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 30 शब्दों में दीजिए।

कपास वाली मृदा।

(i) तीन राज्यों के नाम बताएँ जहाँ काली मृदा पाई जाती है।

महाराष्ट्र
म० प्र०
गुजरात
छत्तीसगढ़

इस पर मुख्य रूप से कौन सी फसल उगाई जाती है ?

कपास
सोयाबीन,

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

उत्तर : काली मृदा का रंग काला होता है।

इन्हें रेंगर मृदा भी कहते हैं।

ये लावाजनक शैलों से बनती हैं।

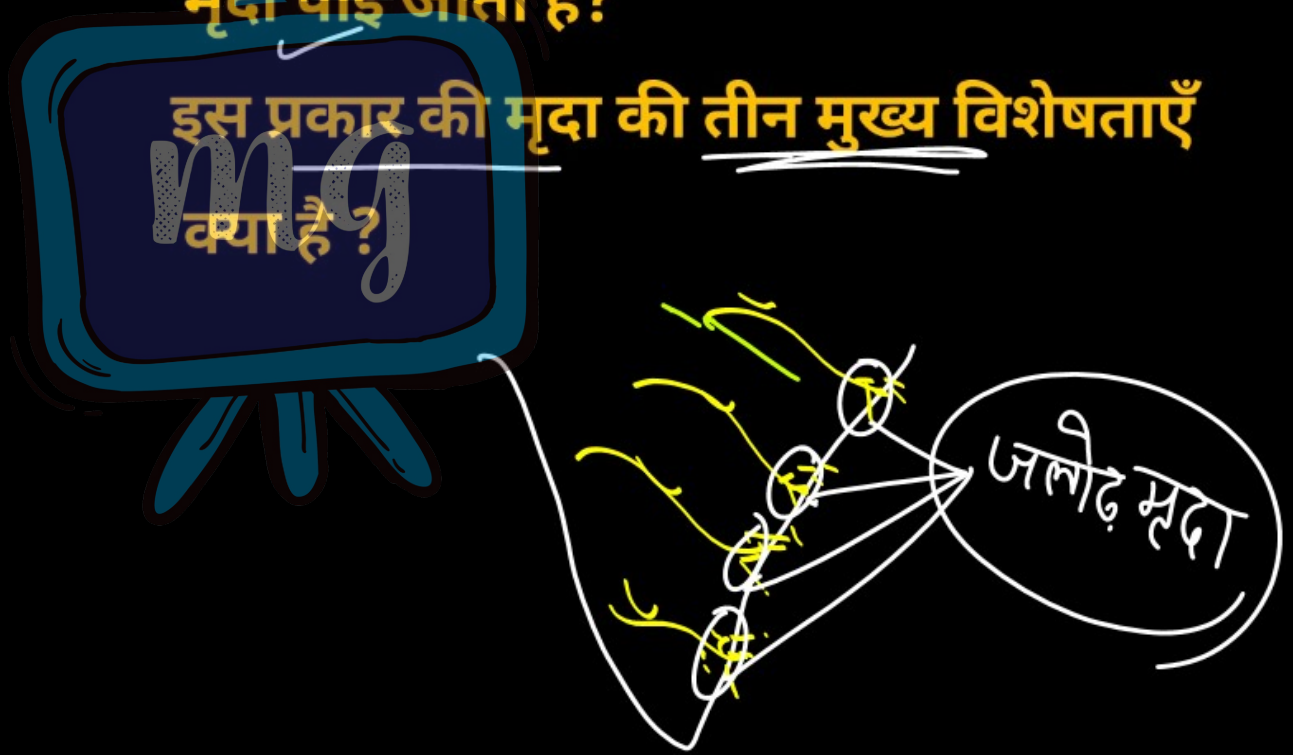
ये मृदाएँ महाराष्ट्र, सौराष्ट्र, मालवा, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ के पठार पर पाई जाती हैं।

काली मृदा कपास की खेती के लिए उचित समझी जाती है। इसे काली कपास मृदा के नाम से भी जाना जाता है।

गुजरात

(ii) पूर्वी तट के नदी डेल्टाओं पर किस प्रकार की मृदा पाई जाती है?

इस प्रकार की मृदा की तीन मुख्य विशेषताएँ क्या है ?



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

उत्तर : पूर्वी तट के नदी डेल्टाओं पर जलोढ़ मृदा पाई जाती है। इस जलोढ़ मृदा की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं —

- यह मृदा हिमालय के तीन महत्त्वपूर्ण नदी तंत्रों- सिंधु, गंगा और ब्रह्मपुत्र नदियों द्वारा लाए गए निक्षेपों से बनी है।

- जलोढ़ मृदा में रेत, सिल्ट और मृत्तिका के विभिन्न अनुपात पाए जाते हैं। जैसे-जैसे हम नदी के मुहाने से घाटी में ऊपर की ओर जाते हैं, मृदा के कणों को आकार बढ़ता चला जाता है।
- जलोढ़ मृदा बहुत उपजाऊ होती है। अधिकतर जलोढ़ मृदाएँ पोटाश, फॉस्फोरस और चूनायुक्त होती हैं जो इनको गन्ने, चावल, गेहूँ और अन्य अनाजों और दलहन फसलों की खेती के लिए उपयुक्त बनाती हैं। अधिक उपजाऊपन के कारण जलोढ़ मृदा वाले क्षेत्रों में गहन कृषि की जाती है।

(iii) पहाड़ी क्षेत्रों में मृदा अपरदन की रोकथाम के लिए क्या कदम उठाने चाहिए ?



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

उत्तर : मृदा के कटाव और उसके बहाव की प्रक्रिया को मृदा अपरदन कहते हैं। विभिन्न मानवीय तथा प्राकृतिक कारणों से मृदा अपरदन होता रहता है। पहाड़ी क्षेत्रों में मृदा अपरदन की रोकथाम के लिए निम्नलिखित तरीके अपनाए जाने चाहिए।

- पर्वतीय ढालों पर समोच्च रेखाओं के समानांतर हल चलाने से ढाल के साथ जल बहाव की गति घटती है। इसे समोच्च जुताई कहा जाता है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- पर्वतीय ढालों पर सीढ़ीदार खेत बनाकर अवनालिका अपरदन को रोका जा सकता है।
- पश्चिमी और मध्य हिमालय में सोपान अथवा सीढ़ीदार कृषि काफी विकसित है।
- पर्वतीय क्षेत्रों में पट्टी कृषि के द्वारा मृदा अपरदन को रोका जाता है। इसमें बड़े खेतों को पट्टियों में बाँटा जाता है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- फसलों के बीच में घास की पट्टियाँ उगाई जाती हैं। ये पवनों द्वारा जनित बल को कमजोर करती हैं।
- पर्वतीय ढालों पर बाँध बनाकर जल प्रवाह को समुचित ढंग से खेती के काम में लाया जा सकता है। मृदा रोधक बाँध अवनालिकाओं के फैलाव को रोकते हैं।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 120 शब्दों में दीजिए।

(i) भारत में भूमि उपयोग प्रारूप का वर्णन करें।

वर्ष 1960-61 से वन के अंतर्गत क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण वृद्धि नहीं हुई, इसका क्या कारण है?

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

उत्तर : भारत में भूमि का उपयोग अलग-अलग प्रकार के कार्यों में किया जाता है।

- कुल भूमि में से 93 प्रतिशत के ही उपयोग के आँकड़े उपलब्ध हैं।
- कुल प्राप्त भूमि में से 46.6 प्रतिशत भूमि शुद्ध-बोये गए क्षेत्र के अंतर्गत आती है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- 22.5 प्रतिशत भूमि पर वन हैं।
- 13.8 प्रतिशत भूमि बंजर और कृषि अयोग्य भूमि है।
- 7.7 प्रतिशत भूमि परती भूमि है।
- 4.8 प्रतिशत भूमि पर चारागाह और बागान हैं।
- 4.6 प्रतिशत बंजर भूमि है।

वर्ष 1960-61 से वन के अंतर्गत क्षेत्र में वृद्धि तो हुई है किंतु यह वृद्धि बहुत मामूली है।

राष्ट्रीय वन नीति (1952) के अनुसार 33 प्रतिशत भूमि पर वन होने चाहिए किंतु भारत में बढ़ती जनसंख्या, अधिक औद्योगीकरण आदि के कारण निरंतर वनों के कटाव से वन भूमि में अधिक वृद्धि नहीं हो पाई है। लगातार भू-उपयोग के कारण भू-संसाधनों का निम्नीकरण हो रहा है। अधिक वन, पर्यावरण को संतुलित करते हैं, मृदा अपरदन को रोकते हैं तथा भूमि को निम्नीकरण से बचाते हैं।

इसलिए अधिक-से-अधिक वृक्ष लगाकर वनों के प्रतिशत को बढ़ाना जरूरी है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

(ii) प्रौद्योगिक और आर्थिक विकास के कारण संसाधनों का अधिक उपभोग कैसे हुआ है ?



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

उत्तर : प्रौद्योगिकी और आर्थिक विकास के चलते संसाधनों का अति इस्तेमाल हुआ है जिसके निम्नलिखित कारण है —

(a) आर्थिक विकास कई प्रकार के नये संसाधनों का दोहन करने के लिए बाध्य करता है जिससे उनका अति दिहन होता है ।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

(b) जब किसी देश में प्रौद्योगिकी के विकास के परिणामस्वरूप आर्थिक विकास होता है तो वहाँ के लोगों के जीवन स्तर में वृद्धि होती है । इसके परिणामस्वरूप मानवीय आवश्यकताएँ बढ़ती है और संसाधानों का ज्यादा से ज्यादा इस्तेमाल होता है ।

(c) चूंकि प्रौद्योगिकी और आर्थिक विकास आपस में अन्त: संबधित है , अत : इसके फलस्वरूप संसाधनों का अति इस्तेमाल होता है ।